नया औद्योगिक हब होगा एससीआर

अर्थशास्त्री, उद्यमी व विशेषज्ञ बोले- शुरुआती दौर में सात से 10 लाख को रोजगार, बढ़ेंगी सुविधाएं

माई सिटी रिपोर्टर

लखनऊ। राज्य राजधानी क्षेत्र (एससीआर) प्रदेश का नया औद्योगिक हब होगा। यहां औद्योगिक विकास के लिए सरकार की गंभीरता, मिलने जा रहीं सुविधाएं और नई घोषणाएं नई उम्मीद जगा रही हैं।

विकसित शहर बनने की बाट जोह रहे सीतापुर, रायबरेली, बाराबंकी, हरदोई और उन्नाव हॉस्पिटैलिटी व कॉर्पोरेट सेक्टर की पहली पसंद बन जाएंगे। नए बदलावों की नई चुनौतियां होंगी, पर नियमित नौकरियां व स्वरोजगार के साथ ही सामाजिक व आर्थिक सुरक्षा सुनिश्चित होगी।

एनसीआर की तर्ज पर एससीआर बनने की ओर बढ़ चले लखनऊ समेत अन्य पांच जिलों में विकास की पटकथा किस तरह से लिखी जाएगी और किस तरह यूपी वाले नोएडा-दिल्ली वालों के एनसीआर की तरह एससीआर वाले कहलाएंगे, इस पर अमर उजाला ने अर्थशास्त्रियों, उद्यमियों और विशेषज्ञों से विमर्श के बाद भविष्य के विकास का एक खाका खींचा है।

- सीतापुर, रायबरेली, हरदोई, बाराबंकी और उन्नाव में डाटा सेंटर, हेल्थ सेंटर, एजुकेशन सेंटर, कॉर्पोरेट ऑफिस के साथ ही हॉस्पिटैलिटी उद्योग के लिए अपार संभावनाएं

पहली जरूरत रोजगार होगी दोगुनी रफ्तार

- सिर्फ लखनऊ में रोजगार के अनुमानित आंकड़ों की बात करें तो 1.6 लाख से अधिक उद्योग धंधे हैं। उद्योग विभाग एक यूनिट की रोजगार देने की औसत क्षमता पांच व्यक्ति बताता है। यानी वर्तमान में छोटी-बड़ी औद्योगिक इकाइयां लगभग आठ लाख परिवारों की रोजी-रोटी चलाती हैं। एससीआर के शुरू होते ही शुरुआती दौर में ही एक लाख यूनिट शुरू हो सकेंगी। इससे करीब सात लाख परिवारों को रोजगार मिलेगा। ये नियमित रोजगार गैर सरकारी क्षेत्र में होंगे। इसके अलावा सड़क, पुल, कारखाने, ऑफिस निर्माण कार्यों के लिए भी मानव संसाधन की जरूरत होगी। कुल मिलाकर सात से 10 लाख लोगों को शुरुआती दौर में ही रोजगार मिल जाएगा।

जानिए, क्या कहते हैं विशेषज्ञ

कुछ इस तरह के केंद्र खुलने की संभावनाएं

- लखनऊ विश्वविद्यालय के वरिष्ठ अर्थशास्त्री प्रो. एमके अग्रवाल के मुताबिक, हर लिहाज से उत्तर प्रदेश हर ओर से जुड़ा हुआ राज्य है। यह सोलर स्टेट बनने की ओर आगे बढ़ चला है। एससीआर बनने से उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग संभव होगा। कृषि को उद्योग से जोड़ने में मदद मिलेगी। एससीआर बनने से लखनऊ से जुड़ने वालों की संख्या बढ़ेगी। लखनऊ में चूंकि जमीन खत्म हो चुकी है, ऐसे में पांच जिलों में डाटा सेंटर, ट्रेनिंग सेंटर, एजुकेशन सेंटर और कॉर्पोरेट ऑफिस के लिए मांग बढ़ जाएगी। रायबरेली में अभी लोग होटल इंडस्ट्री खोलने के लिए आगे नहीं आ रहे, एससीआर बनने के बाद इसकी संभावना बढ़ जाएगी। बगल में अयोध्या व नैमिषारण्य होने के कारण होटल कारोबार को और बल मिलेगा।

सड़क-परिवहन के साधनों का विस्तार

राजकीय निर्माण निगम के चीफ आर्किटेक्ट व इंडस्ट्रियल कॉरिडोर के नोडल अधिकारी केके अस्थाना बताते हैं कि एससीआर से सबसे पहला फायदा कनेक्टिविटी का होगा। दूसरा सुविधाओं का विस्तार सभी पांचों शहरों के साथ-साथ आसपास के इलाकों में होगा। लखनऊ का कुल क्षेत्रफल 25 वर्ग किलोमीटर है। एससीआर बन जाने से इसका क्षेत्रफल लगभग दस गुना से भी ज्यादा बढ़ जाएगा। ऐसे में सबसे बड़ी जरूरत रैपिड ट्रांसपोर्ट सिस्टम विकसित करने की होगी। इसके फायदे को इस उदाहरण से समझ सकते हैं कि लखनऊ से हरदोई जाने में अभी दो से ढाई घंटा लगता है। एससीआर में आने से यह समय घटकर आधे से भी कम हो जाएगा।

फायदे भी, पर चुनौतियां भी कम नहीं

लघु उद्योग भारती व सरोजनीनगर मैन्युफैक्चरर एसोसिएशन के रितेश श्रीवास्तव के मुताबिक, उद्योगों का विस्तार हो सकता है तो रोजगार के अवसर भी बढ़ेंगे। एससीआर की स्थिति से प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हो सकती है, जिससे उद्योगों को अपनी उत्पादकता और गुणवत्ता में सुधार करना पड़ सकता है। हालांकि, उद्यमियों के मन में ये भी डर है कि एससीआर की स्थिति से मौजूदा उद्योगों का विस्थापन हो सकता है, जिससे उन्हें नए स्थानों पर स्थानांतरित होना पड़ सकता है।